कृष्णयजुर्वेदीय चाक्षुषोपनिषद्

अब नेत्र-रोगका हरण करनेवाली तथा पाठमात्रसे सिद्ध होनेवाली चाक्षुषीविद्याकी व्याख्या करते हैं, जिससे समस्त नेत्ररोगोंका सम्पूर्णतया नाश हो जाता है और नेत्र तेजयुक्त हो जाते हैं। उस चाक्षुषी विद्याके अहिर्बुध्न्य ऋषि हैं, गायत्री छन्द है, भगवान् सूर्य देवता हैं, नेत्ररोगकी निवृत्तिके लिये इसका जप होता है—यह विनियोग है[1]।

चाक्षुषीविद्या

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति॥

ॐ (भगवान्‌का नाम लेकर कहे), हे चक्षुके अभिमानी सूर्यदेव! आप चक्षुमें चक्षुके तेजरूपसे स्थिर हो जायँ। मेरी रक्षा करें, रक्षा करें। मेरी आँखके रोगोंका शीघ्र शमन करें, शमन करें। मुझे अपना सुवर्ण-जैसा तेज दिखला दें, दिखला दें। जिससे मैं अन्धा न होऊँ, कृपया वैसे ही उपाय करें, उपाय करें। मेरा कल्याण करें, कल्याण करें। दर्शन-शक्तिका अवरोध करनेवाले मेरे पूर्वजन्मार्जित जितने भी पाप हैं, सबको जड़से उखाड़ दें, जड़से उखाड़ दें। ॐ (सच्चिदानन्दस्वरूप) नेत्रोंको तेज प्रदान करनेवाले दिव्यस्वरूप भगवान् भास्करको नमस्कार है। ॐ करुणाकर अमृतस्वरूपको नमस्कार है। ॐ भगवान् सूर्यको नमस्कार है। ॐ नेत्रोंके प्रकाश भगवान् सूर्यदेवको नमस्कार है। ॐ आकाशविहारीको नमस्कार है। परम श्रेष्ठस्वरूपको नमस्कार है। ॐ (सबमें क्रिया-शक्ति उत्पन्न करनेवाले) रजोगुणरूप भगवान् सूर्यको नमस्कार है। (अन्धकारको सर्वथा अपने भीतर लीन करनेवाले) तमोगुणके आश्रयभूत भगवान् सूर्यको नमस्कार है। हे भगवन्! आप मुझको असत्‌से सत्‌की ओर ले चलिये। अन्धकारसे प्रकाशकी ओर ले चलिये। मृत्युसे अमृतकी ओर ले चलिये। उष्णस्वरूप भगवान् सूर्य शुचिरूप हैं। हंसस्वरूप भगवान् सूर्य शुचि तथा अप्रतिरूप हैं—उनके तेजोमय स्वरूपकी समता करनेवाला कोई भी नहीं है। जो ब्राह्मण इस चक्षुष्मतीविद्याका नित्य पाठ करता है, उसे नेत्र-सम्बन्धी कोई रोग नहीं होता। उसके कुलमें कोई अंधा नहीं होता। आठ ब्राह्मणोंको इस विद्याका दान करनेपर—इसका ग्रहण करा देनेपर इस विद्याकी सिद्धि होती है।[2]

---

१. ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।

२. चाक्षुषी-(नेत्र-) उपनिषद्‌की शीघ्र फल देनेवाली विधि—नेत्ररोगसे पीड़ित श्रद्धालु साधकको चाहिये कि प्रतिदिन प्रातःकाल हल्दीके घोलसे अनारकी शाखाकी कलमसे काँसेके पात्रमें निम्नलिखित बत्तीसा यन्त्रको लिखे—

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

'मम चक्षूरोगान् शमय शमय'

फिर उसी यन्त्रपर ताँबेकी कटोरीमें चतुर्मुख (चारों ओर चार बत्तियोंका) घीका दीपक जलाकर रख दे। तदनन्तर गन्ध-पुष्पादिसे यन्त्रका पूजन करे। फिर पूर्वकी ओर मुख करके बैठे और हरिद्रा (हल्दी) की मालासे 'ॐ ह्रीं हंसः' इस बीजमन्त्रकी छः मालाएँ जपकर चाक्षुषोपनिषद्‌के कम-से-कम बारह पाठ करे। पाठके पश्चात् फिर उपर्युक्त बीजमन्त्रकी पाँच मालाएँ जपे। इसके बाद भगवान् सूर्यको श्रद्धापूर्वक अर्घ्य देकर प्रणाम करे और मनमें यह निश्चय करे कि मेरा नेत्ररोग शीघ्र ही नष्ट हो जायगा। ऐसा करते रहनेसे इस उपनिषद्‌का नेत्ररोगनाशमें अद्भुत प्रभाव बहुत शीघ्र देखनेमें आता है।

—पं० श्रीमुकुन्दवल्लभजी मिश्र, ज्यौतिषाचार्य